राष्ट्रीय संगोष्ठी रिपोर्ट

राजकीय महाविद्यालय ठियोग में हिंदी विभाग द्वारा 15 नवंबर 2025 को प्राचार्य डॉ भूपेंद्र सिंह ठाकुर के संरक्षण डॉ सत्यनारायण स्नेही के संयोजन और डॉ बविता ठाकुर के सह संयोजन में ' साहित्य में समकालीनता' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस एक दिवसीय संगोष्ठी में देश भर के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। जिसमें करीब 8 विश्वविद्यालय और 35 महाविद्यालयों के सहायक,सहआचार्य और शोध छात्र सम्मिलित हुए। संगोष्ठी तीन सत्रों में आयोजित की गई ।प्रथम सत्र उद्घाटन सत्र में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ भूपेंद्र सिंह ठाकुर ने अपने उद्बोधन से प्रारंभ हुआ । संगोष्ठी के संयोजक डॉ सत्यनारायण स्नेही ने संयोजकीय वक्तव्य में सभी का स्वागत अभिनंदन और विषय की प्रासंगिकता, उपयोगिता और सार्थकता के बारे में अपनी बात रखी। बीज वक्ता के रूप में केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला से आए प्रोफेसर चंद्रकांत सिंह ने साहित्य में समकालीनता विषय पर अपनी संक्षिप्त और सारगर्भित बात कही। कि हर युग में जो साहित्य है वह उस काल की अवस्था को किसी न किसी रूप में प्रकट करता आया है। इसलिए हर साहित्य की समकालीनता अपने युग के हिसाब से होती है ।इसी सत्र के दूसरे वक्ता वरिष्ठ आलोचक डॉ हेमराज कौशिक ने आधुनिक काल में समकालीनता को लेकर बात की । जिसमें भारतेंदु युग ,द्विवेदी युग, छायावाद युग, प्रगति और प्रयोग काल में लिखे गए साहित्य में तत्कालीन स्थिति को स्पष्ट किया। दूसरे सत्र में चंबा महाविद्यालय से आए युवा आलोचक डॉ प्रशांतरमन रवि ने भक्तिकालीन साहित्य में समकालीनता को स्पष्ट करते हुए कहा कि यह साहित्य का पहला ऐसा रूप है ,जिसने साहित्य में मंत्र का दर्जा प्राप्त किया है। अगले वक्ता डॉ राजन तंवर ने आदिकालीन साहित्य में समकालीनता पर बात करते हुए कहा कि अगर सच कहा जाए तो नारी विमर्श की जो बात हम आज करते हैं, इसके बीज आदिकालीन साहित्य में पड़ चुके थे। रीतिकालीन साहित्य में समकालीनता पर बात करते हुए डॉ बलदेव ठाकुर ने रीतिबद्ध, रीति सिद्ध और रीतिमुक्त साहित्य में समकालीनता की पड़ताल की कि

दरबारी साहित्य होते हुए भी रीतिकालीन साहित्य में समकालीनता परिलक्षित होती है। तथा हिंदी विभाग अध्यक्ष हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय डॉ शोभा रानी ने साहित्य के विविध संदर्भों को लेकर के अपनी बात कही ।समापन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में संस्कृत के विद्वान डॉ दयानंद शर्मा ने संस्कृत साहित्य के में समकालीन स्थितियों पर दृष्टिपात किया ।इसी सत्र में डॉ दिनेश शर्मा, डॉ बॉबीजा शर्मा, डॉ वीरेंद्र सिंह, महेश्वर और सुभाष ने अपने पत्र और प्रतिक्रिया को प्रस्तुत किया। इस संगोष्ठी में कार्यक्रम का संचालन सह संयोजक डॉ बबीता ठाकुर ने किया तथा डॉ अनीता राठौर ने सभी का धन्यवाद किया। दिनभर साहित्य पर गहन विचार मंथन के उपरांत समापन सत्र में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरण के साथ यह संगोष्ठी अनेक तर्कों तथ्यों ,प्रश्नों और समाधानों के साथ संपन्न हुई।

राजकीय महाविद्यालय ठियोग

ठियोग, शिमला
सम्मान प्रतीक

हिन्दी विभाग
सम्मान प्रतीक

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित
राष्ट्रीय संगोष्ठी
साहित्य में समकालीनता
डॉ सत्यनारायणस्नेही
डॉ बी० एस० ठाकुर
प्राचार्य
डॉ चन्द्रकान्त सिंह
डॉ हेमराज

राजकीय महाविद्यालय ठियोग, शिमला
हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित
राष्ट्रीय संगोष्ठी
साहित्य में समकालीनता
2025

राजकीय महाविद्यालय ठियोग, शिमला
डॉ बी0 एस0 ठाकुर
डॉ अनीता राठौर